Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

REVIEW OF RESEARCH

युग पृष्ठ भूमि और नागार्जुन के उपन्यास

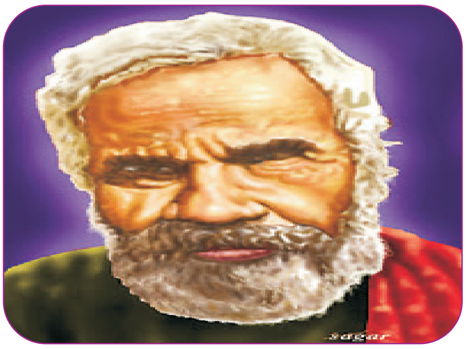

डॉ. गुंजन पाठक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
प्रभादेवी डिग्री कालेज, सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)

सारांश

नागार्जुन जन चेतना सम्पन्न हिन्दी कथाकारों की परम्परा के अग्रणी लेखकों में हैं। एक प्रकार से प्रेमचन्द की परम्परा में उन्होंने अपनी यथार्थवादी औपन्यासिक पद्धति का विकास किया है। प्रेमचन्द की कुछ ऐतिहासिक सीमाएँ भी थी। वे गाँधीवाद के प्रभाव में एक काल्पनिक सुधारवाद से चलकर यथार्थ–दर्शन तक पहुँचे थे। नागार्जुन ने जहाँ से आरम्भ किया है, वहीं से उन्हें मार्क्सवाद जैसी विचारधारा का बल प्राप्त रहा है। नागार्जुन के अपने अन्तः विरोध हो सकते हैं। पर वे जानते हैं कि विभिन्न स्तरों पर चलने वाला संघर्ष किस गंतव्य की ओर ले जाता है। नागार्जुन ने जब रचनाकर्म आरम्भ किया तब आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास परम्परा महत्वपूर्ण समझी जा रही थी।

मुख्य शब्द : नागार्जुन, ऐतिहासिक, उपन्यास, सामाजिक जीवन, नैतिकता।

प्रस्तावना :

साहित्य के अंतर्गत, जीव और उसके परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली, सबसे सशक्त विद्या उपन्यास है। इसी कारण उपन्यास साहित्य में युग की सम्पूर्ण परिस्थितियाँ और समस्याएँ समाहित हो जाती हैं। सुप्रसिद्ध आलोचक राल्फफॉक ने कहा है कि युग की परिस्थितियों की उपेक्षा साहित्यकार नहीं कर सकता। उनका कहाना है– "क्या उपन्यासकार दुनिया की समस्याओं की, जिनमें वह रहता है उपेक्षा कर सकता है ? क्या वह अपने चारों ओर भयानक वातावरण देखकर अपना मुँह बन्द रख सकता है ?"

इस प्रकार के विचार उपन्यासकार प्रेमचंद ने भी व्यक्त किये हैं– "साहित्यकार बहुधा अपने देश–काल की परिस्थितियों से प्रभावित रहता है, जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है : और उसकी आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और उस तीव्र विकलता में भी वह रो उठता है पर उसके रूदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है।"[1]

डॉ0 कर्ण सिंह चौहान ने लिखो है– "नागार्जुन के अधिकांश उपन्यास उस काल में ही छपकर सामने आये जब साहित्यिक हलकों में प्रयोगवाद और नयी कविता का जोर बढ़ रहा था। नयी कहानी के नाम से शुरू हुए आन्दोलन में भी मध्यवर्गीय मानसिकता वाले रचनाकार नये गुल खिलाने के चक्कर में थे। इन नये आन्दोलनों के बीच रचनाकारों का एक बड़ा तबका होता भी था; जो शीत युद्ध की राजनीति से प्रेरित था और साहित्य के बुनियादी सवालों से ध्यान हटाने के लिए अनेकानेक नये नारे दे रहा था, कथा साहित्य में भी प्रेमचन्द के बाद ऐसे कई मशहूर नाम उभरे जो उसकी परिधि को व्यक्तिवाद की सीमाओं में कैद कर रहे थे। ऐसे में नागार्जुन ने अपने उपन्यासों को शोषित–पीड़ित वर्गो की धुरी पर टिकाने का साहस दिखाया। इसलिए इस बीच चले तमाम साहित्यान्दोलनों से अलग–अलग रहते हुए उन्होंने यह अलख जगाए रखी।"[2]

उपन्यासकार नागार्जुन के लिए 1935 में से 1947 तक की कालावधि, वह समय है जब उन्होंने बिहार जनपद के ग्रामीण अंचल का न केवल बहुत निकट से दर्शन ही किया, वरन् वहाँ के जन–जीवन के हर्ष–विवादों, आशा–आकांक्षाओं और संघर्षपूर्ण स्थितियों से निकट का तादात्म्य भी स्थापित किया। उनके दुःख–दर्द को जितना उन्होंने देखा और समझा है, उतना विरले ही रचनाकार समझ पाये हैं, कारण, उन्होंने उस अंचल के जीवन को स्वयं भोगा है।

प्रत्येक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना व्यापक सामाजिक प्रतिक्रिया को जन्म देती है। चूँकि नागार्जुन के उपन्यासों का काल–खण्ड अंग्रेजों के भारत में आगमन से लेकर स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद तक (सन् 1968) फैला हुआ था, अतः सामाजिक दृष्टि से भी यह काल भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि राजनीतिक दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर यह काल भारी उथल–पुथल का है। यथा–द्वितीय विश्वयुद्ध, भारत का स्वतन्त्रता–आन्दोलन और भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त, भारत–पाक बँटवारा, इस काल की कतिपय प्रमुख उल्लेखनीय घटनाएँ हैं। नागार्जुन साहित्य के सामाजिक एवं धार्मिक–सन्दर्भो को स्पष्ट करने के लिए अनेक युग भी सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को जानना भी प्रसंगापेक्षी है।

प्राचीन भारत में गाँव के लोग आर्थिक अभावों में रहने के कारण सामाजिक दृष्टि से आवश्यक व वांछित विकास नहीं कर सके। इस काल का भारतीय समाज ग्राम–पंचायतों, जाति–व्यवस्था और संयुक्त परिवारों द्वारा नियंत्रित होता था तथा अनेक रूढ़ियों, रीति–रिवाजों एवं सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था। यह समाज अपने को युगानुरूप परिवर्तित न कर सका और अनेक विकृतियों और विसंगतियों ने इसे अविकसित ही बना रहने दिया।

स्वतंत्रता के बाद विस्थापित लोगों की समस्या और विस्थापित नारी–पुरूष के संबन्धों को नयी स्थितियों ने सामाजिक स्तर पर काफी जटिल कर दिया। इस बदलते सामाजिक परिवेश में प्रेम तथा विवाह के क्षेत्र में स्वातन्त्र्य, विवाहरोपरांत स्वतंत्रता और यौन सम्बन्धी नैतिकता को नये मापदंडों से

मापा जाने लगा। सामाजिक स्तर पर स्त्री और पुरुष, दोनों ही प्रचलित वैवाहिक मर्यादाओं का विरोध करने लगे। नारी को पति–वरण की स्वतंत्रता मिल गयी। यदि वह चाहे तो पति को तलाक भी दे सकती थी।

ठस बदलते सामाजिक परिवेश ने जागरूक उपन्यासकार नागार्जुन को प्रभावित किया। उपर्युक्त प्रत्येक सामाजिक घटना की प्रतिक्रिया की अनुगूंज उनके उपन्यासों में व्याप्त है। उन्होंने अपने 'इमरतिया' उपन्यास में हरिजन वर्ग के साथ पूर्व सहानुभूति व्यक्त की है। उनकी दृष्टि में सब समान हैं। इस उपन्यास का मस्तराम उपन्यासकार के ऐसे ही विचारों को अभिव्यक्त देता हुआ कहता है– "इसी तरह मेहतर भी सफाई का काम कर चुकने के बाद नहा–धो ले बदल ले, फिर हमारे साथ बैठकर वह पूजा–पाठ में क्यों नहीं शामिल होगा? आत्मा तो एक ही है, शरीर का चोला अलग–अगल हो सकता है।"[3]

'दुखमोचन' की माया और कपिल का अन्तर्जातीय विवाह कराकर उपन्यासकार ने उन्हें सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान की है। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में गौरी का यह कथन– "जिस समाज में हजारों की तादाद में विधवाएँ रहेंगी वहाँ यही सब तो होगा।"[4] उपन्यासकार की विधवा विवाह के प्रति आस्था का सूचक है। 'नई पौध' और 'पारो' उपन्यासों में अनमेल–विवाह की समस्या को उठाया गया है। 'नई पौध' उपन्यास के नवयुवक बूढ़े–दूल्हा चतुरा चौधरी को बारात सहित वापस भगा देते है और बिसेसरी के साथ उसके अनमेल विवाह को रोक देते हैं। इस उपन्यास में नयी चेतना सड़ी–गली सामाजिक परम्पराओं पर विजय प्राप्त करती है। इस उपन्यास में नारी–विक्रय का यथार्थ चित्रण कर उपन्यासकार ने नारी–विक्रय का भी विरोध किया है। नागार्जुन के उपन्यासों का युवा वर्ग अन्याय के विरोध में लड़ रहा है। 'पारो' उपन्यास में पार्वती उपन्यासकार के विचारों को व्यक्त करती है। उसके व्यंग्य–वर्णो ने वहाँ के ब्राह्मण समाज के क्षुब्ध कर दिया और समाज में एक क्रांति ला दी है। वह अपने ममेरे भाई बिरजू से कहती है– हे भगवान! लाख दंड दे मगर फिर औरत बनाकर इस देश में जन्म नहीं दे।"[5] जब बिरजू की अविवाहिता बहन अर्पणा का जिक्र आता है, तो वह कहती है– "उमर थोड़ी अधिक हो जायेगी तो क्या हो जायेगा, झंझट लगे तो जहर ही खिला दीजिएगा।"[6] 'रतिनाथ की चाची' में भी कथाकार ने गौरी से भी ऐसे ही शब्द कहलवायें है– "हे भगवान, अगले जन्म भले ही मैं चुहिया होऊँ, भले ही नेवला, मगर चेतनामय इस मानव समाज में फिर कभी न पैदा होऊँ।"[7] 'उग्रतारा' की उगनी शिक्षा के महत्व को स्वीकार करती हुई गीता से कहती है– "तीसरी आँख होती है विद्या, समझी।"[8] इस प्रकार नागार्जुन इस उपन्यास में नारी–शिक्षा को ही वे समाज को आगे बढ़ाने का साधन मानते हैं।

उपन्यासकार की इच्छा है कि नारी में आत्म–विश्वास जाग्रत हो और वह स्वावलम्बी बने। नागार्जुन ने अपने इस उद्देश्य को 'कम्भीपाक' उपन्यास में राम साहब से पूरा कराया है– "बस, बस, यही आत्म–विश्वास में स्त्रियों में देखना चाहता हूँ। .... श्रम, प्रज्ञा, सहयोग, विवके, और सुरूचि सभी आवश्यक है– चंपा! पुरूषों की बपौती नहीं। स्त्रियों का भी साझा है उनमें।"[9]

नागार्जुन का प्रयास है कि जाति–पॉति का भेद–भाव समाज से सदैव के लिए मिट जाये। 'वरूण के बेटे' उपन्यास का मोहन माँझी कहता है– "मैथिली महासभा, राजपूत सभा, दुसाध महासभा आदि जो भी सांप्रदायिक संगठन हैं सभी का बायकाट होना चाहिए। इन महासभाओं के नेता आम लोगों की एकता में दरार डालने का ही एकमात्र काम करते हैं।"[10]

'रतिनाथ की चाची' में रतिनाथ तथा बागों का, 'वरूण के बेटे' में माधुरी और मंगल का विवाह पूर्व–प्रेम, की प्रचलित सामाजिक मान्यताओं का विरोध करता है। 'उग्रतारा की उगनी, गांव की बाल–विधवा, कामेश्वर के प्रेम में गाँव छोड़कर भाग जाती है। इस उपन्यास के स्त्री और पुरूष–पात्र समाज में प्रचलित मर्यादाओं और परम्पराओं का विरोध करते हैं। 'वरूण के बेटे' उपन्यास की माधुरी अपने पति को छोड़कर भाग जाती है। इस उपन्यास के स्त्री और पुरूष–पात्र समाज में प्रचलित मर्यादाओं और परम्पराओं का विरोध करते हैं। 'वरूण के बेटे' उपन्यास की माधुरी अपने पति को छोड़कर घर आ जाती है। उसका अपने पति को तलाक देना, दूसरा विवाह करने अथवा एकाकी रहने का विचार व्यक्त करना विवाह की परम्परागत सामाजिक मान्यताओं में अनास्था प्रकट करता है और नवीन विचारों में उसका विश्वास नागार्जुन के उपन्यासों की नारी के बदलते हुए दृष्टिकोण का परिचायक है। "भारत सदैव धर्मप्राण देश रहा है। यहाँ समाज का आधार धर्म का वास्तविक अर्थ कर्तव्य, सत्कार्य या गुण से होता है। व्युत्पति की दृष्टि से 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु और 'मन्' प्रत्यय से बना है, जिसका अर्थ है– धारण करना।"[11] किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति, जो उसमें सदा रहे और उससे कभी पृथक न हो धर्म कहलाती है। जब हम सामाजिक कार्यो पर धर्म प्रभाव के संदर्भ में धर्म पर विचार करते हैं तो धर्म और नैतिकता में कोई विशेष अन्तर नहीं रह जाता। नैतिकता भी अपने उच्चतम रूप में सत्यं, शिवं एवं सुंदरं का ही अनुशीलन है।

जिस समय नागार्जुन लेखन–कार्य में प्रवृत्त हए, उस काल में वैज्ञानिक प्रभाव के कारण लोगों का धर्म के प्रति दृष्टिकोण बदलता जा रह था। लेकिन अब भी स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित करने वाली शक्तियाँ–महंत, पंडे–पुजारी पादरी, मुल्ला–मौलवी आदि भाग्यवाद का प्रचार कर सामान्य लोगों को गुमराह कर शोषण कर रहे थे। ये लोग पूँजीवादी शक्तियों के प्रति निष्ठावान थे और प्राचीन शास्त्रों की व्याख्या उन्हीं की सत्ता को मजबूत करने के पक्ष में कर रहे थे, लेकिन परम्परा का भूत अब भी उनके सिर पर सवार था।

नागार्जुन जैसे चेतना–सम्पन्न साहित्यकार पर इन सबका प्रभाव पड़ा और उनकी लेखनी आडम्बरों, रीति–रिवाजों, सनातन परम्पराओं, रूढ़ियों जात–पात तथा धार्मिक अन्धविश्वासों के विरूद्ध जमकर प्रहार करने लगी जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति उनकी औपन्यासिक कृतियों में उपलब्ध है। 'दुखमोचन' उपन्यास में टेकनाथ का बैल दुर्घटना में ज जाने वर दुखमोचन उसे प्रायश्चित के चक्कर में फँसने से बचाता है। दुखमोचन के इस व्यवहार को देखकर नित्याबाबू कहते हैं– "जात–पाँत और धर्म–कर्म पर संकट ही संकट चला जा रहा है। कल के छोकरे हम बूढ़ों की नाक में कौड़ी बाँध रहे हैं।"[12]

'बलचनमा' उपन्यास का बालचंद राउत भाग्य और ईश्वर को अंतिम सत्य मानने को तैयार नहीं है। 'पारो' उपन्यास की पार्वती उर्फ पारो पति चुल्हाई चौधरी आधी रात के समय उसके साथ राक्षस जैसी हरकतें करता है, तो वह बेहोश होकर आंगन में गिरी हुई अपने ममेरे भाई बिरजू को दिखाई देती है। तब चुल्हाई चौधरी गुलाब की कच्ची कली को मसलने वाले धृष्ट बारहसिंहे के समान बिरजू के ध्यान में आता है और उसका विश्वास ईश्वर और सृष्टि पर से उठ जाता है। उपन्यासकार ने धार्मिक अंधविश्वासों एवं साधुओं के पाखंडों का घोर विरोध किया है। उसका मानना है कि अबोध जनता धार्मिक अंधविश्वासों में फंसकर अपना अहित कर रही है। उनके 'रतिनाथ की चाची', 'बाबा बटेसर नाथ' और 'इमरतिया' में इस तथ्य का यथार्थ चित्रण मिलता है। ब्राह्मणों का धर्म भी दिखावा मात्र है और स्वार्थ सिद्धि का माध्यम है। यह सामाजिक विषमता और विकृतियों का पोषण करता है। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में रतिनाथ अपने मजदूर कुल्ली राउत के साथ जाते समय मार्ग में पड़े तालाब के किनारे बैठ जल्दी–जल्दी संध्या करता है। कुल्ली राउत यह सब देखकर रतिनाथ से कह उठता है– "तुम तो नीलमाधव के वंशधर हो, तुम्हें इतनी जल्दी नहीं करती चाहिए।"[13] इसके उत्तर में रतिनाथ जो कुछ कहता है वह उसकी आडम्बर–प्रियता का द्योतक है– "अरे यहाँ कौन देखता है ? देखना चलकर तरकुलवा में घंटा भर नाक न दबाये रहा तो जो कहो।"[14] राउत ने मुस्कुराकर कहा "लो बा पके गुण सीख न गये।"[15] रतिनाथ को कुल्ली राउत के इस बात में सत्य के दर्शन होते हैं और वह विचार करने लगता है कि उच्च जाति के ब्राह्मण और निम्न जाति के राउत की विषम आर्थिक स्थिति का कारण वस्तुतः धर्म और जाति के विधि–विधान ही हैं। इसी उपन्यास में साधु की विषम आर्थिक स्थिति का कारण वस्तुतः धर्म और जाति के विधि–विधान ही हैं। इसी उपन्यास में साधु सारा का जयनाथ से यह कहना– "भगवती

त्रिपुरा सुन्दरी का पंचाक्षर मंत्र है, वह आवांछित गर्भ को गिराने में अनुपम है।"[16] इस तथ्य का उदाहरण है कि धर्म किस सीमा तक पतन के गर्त में जा चुका है। महातीर्थ काशी की यथार्थ स्थिति के बारे में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि 'राँड–साँड, सीढ़ी, सन्यासी, इनसे बचे सो सेवै काशी।"[17] उपन्यासकार ने 'बाबा बटेसरनाथ' में अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों का डटकर विरोध किया है। उन्होंने मानव रूपधारी वृक्ष बाबा बटेसरनाथ से अपनी विचार–धारा को व्यक्त कराया है– "मनुष्यों की बलि चाहने वाले यक्ष–गंधर्व, देव–देवरिया और ब्रह्म अब बाहर नहीं रह गये– मोटी जिल्दों वाले पुराने पोथों की बारीक पंक्तियों के अन्दर आज वे नजरबंद है।"[18]

उनके 'इमरतिया' उपन्यास में भी साधुओं की पोल खोल गयी हैं, एवं हिन्दू धर्म की तुलना एक ऐसे पेड़ से की है जिस पर हजारों चमगादड़ लटके रहते हैं। इस उपन्यास में वर्णित 'जमनिया का मठ' जघन्य कृत्य एवं व्यभिचार, देश–द्रोह आदि कारनामों का अड्डा बना हुआ है।

उद्देश्य : कोई भी साहित्यिक कृति जिस देश, काल खंड व समाज में जन्म लेती है, उस देश, काल तथा समाज का प्रभाव उस कृति पर पड़ना अनिवार्य है। उस काल की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं दार्शनिक विचार धाराओं के बीच से ही साहित्यकार की चेतना के विकास का स्फुरण होता है। साहित्यकार के निजी दृष्टिकोण को उस युग की परिस्थितियाँ और बदलती हुई सामाजिक चेतना बहुत दूर तक प्रभावित करती है। अतीत साहित्यकार को अनुभव प्रदान करता है, भविष्य उसमें आशा का संचार करता है, परन्तु युग साहित्यकार का निर्माण करता है। साहित्यकार युग–चेतना से प्रभावित रहता है। नागार्जुन पर भी उनके काल की सम्पूर्ण चेतना प्रबल रू से हावी रही है। नागार्जुन स्वयं लिखते हैं– "इस बात में अधिक विवाद की गुंजाइश नहीं है कि जिस विशिष्ट राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक परिवेश में साहित्यकार की चेतना प्रस्फुटन होता है उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।"[19]

साहित्यवलोकन : हम कह सकते हैं कि नागार्जुन यदि यथार्थ चित्रण की वास्तविक दिशा पहचान सके तो उसका प्रमुख कारण यह था कि उन्हें अपने परिवेश की अन्तरंग वास्तविकता की प्रमाणिक जानकारी भी थी और उने पास सामाजिक जीवन में घटित हो रहे परिवर्तनों को समझने की दृष्टि भी थी। प्रायः नागार्जुन परिवेश के रूप में उस अंचल को लेते हैं। जिसकी उथल–पुथल से उनका घनिष्ट परिचय है। इस आंचलिक जीवन के शोषित पीड़ितजन के संघर्ष करते हुए वे आन्तरिक ऊर्जा को भी पहचानते हैं। उनकी दृष्टि में भी संघर्ष करने वाली जनता की एक अपनी संस्कृति होती है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार वे प्रचलित सामाजिक कुप्रथाओं के कारण रूढ़िगत धर्म के पालन को समाज के लिए क्षय–रोग के समान घातक मानते हैं। कट्टर पंडित समाज में वैमनस्य फैलाते हैं। पाखंडी–साधु व ठग महात्मा निर्धनों के श्रम की कमाई का शोषण करते है। समाज को धर्म के ऐसे संक्रामक रोग से यदि बचना है, तो धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना होगा। उपन्यासकार नागार्जुन ने नवीन घटनाक्रम के परिणाम–स्वरूप जन्मी सामाजिक एवं धार्मिक चेतना पर अपनी पैनी दृष्टि रखी है, और उनकी प्रत्येक औपन्यासिक कृति इस नवीन चेतना का सशक्त वाहक बन बई है। उनका मानना है कि समाज जब धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति पा लेगा, तभी जन–कल्याणवादी समाज का निर्माण संभव होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1.द नावल एण्ड द पीपल : राल्फ फॉक्स ट. 67
2.नागार्जुन की चुनी रचनायें : भाग एक : पृ. – 11
3.इमरतिया नागार्जुन पृ. 35
4.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन : अभिनव प्रकाशन पृ. 30
5.नागार्जुन, पारो, कुलानंद मिश्र द्वारा हिन्दी रूपान्तर, प्रथम संस्करण 1947 पृ. 55
6.नागार्जुन, पारो, कुलानद मिश्र द्वारा हिन्दी रूपान्तर, प्रथम संस्करण 1947 पृ. 55
7.रतिनाथ की चाची नागार्जुन पृ. 147
8.उग्रतारा : नागार्जुन, पृ. 55
9.कुम्भीपाक : नागार्जुन, पृ. 130
10.वरूण के बेटे : नागार्जुन, 1975, पृ. 36–37
11.संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम : चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, सम्पादक पृ. 564
12.दुखमोचन : नागार्जुन, पांचवी आवृत्ति 1972, पृ. 94
13.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1977, पृ. 55
14.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1977, पृ. 55
15.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1977, पृ.55
16.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1977, पृ. 44
17.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1977, पृ. 80–81
18.रतिनाथ की चाची : नागार्जुन, अभिनव प्रकाशन, 1971, पृ. 71–72
19.युगधारा : प्रकाशकीय वक्तव्य : यात्री प्रकाशन, इलाहाबाद 1953

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/